ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

महंगाई का शैक्षिक एवं बौद्धिक समाधान
Educational and Intellectual Solution To Inflation

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 20/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

मो0 उस्मान
एसोसिएट प्रोफेसर,
बी0एड्0 विभाग
किसान स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बहराइच,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

पूर्ति एवं मांग में सकारात्मक सम्बन्ध है अर्थात किसी वस्तु की जब मांग बढ़ती है तो यह निश्चित है कि उसकी पूर्ति प्रभावी तरीके से नहीं हो पा रही है। सामान्यतः उसी मानव की मांग समाज में अधिक होती है जो सुलभता से उपलब्ध नही होता है। महंगाई बढ़ने से प्रत्येक वस्तु के मूल्य बढ़ने लगते है साथ ही साथ लोगों तक वस्तुओं की पूर्ति कम होने लगती है।

There is a positive relationship between supply and demand, that is, when the demand for a commodity increases, it is certain that its supply is not being done effectively. Generally, the demand of the same human is high in the society which is not easily available. With the rise in inflation, the price of every commodity increases, as well as the supply of goods to the people decreases.

मुख्य शब्द : माँग, पूर्ति, शैक्षिक, बौद्धिक, गुणवत्ता, मूल्यवृद्धि।
Key words: Demand, Supply, Educational, Intellectual, Quality, Value Addition.

प्रस्तावना

किसी वस्तु की पूर्ति उसकी मांग को सुनिश्चित करती है जिसके आधार पर मनुष्य अपनी उपयोगिता सुनिश्चित करके वस्तु की प्राप्ति करता है, यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि मनुष्य उसी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है जो समाज में आसानी से सुलभ न हो। दुर्लभ अथवा उन वस्तुओं की जिनकी आपूर्ती कम होती है उनकी मांग अपने आप बढ़ जाती है, इसे हम मानवीय आधार पर भी सिद्ध कर सकते है कि उसी मानव की मांग समाज में अधिक होती है जो सुलभता से उपलब्ध नहीं होता है। महंगाई का सम्प्रत्यय वस्तुओं में कमी एवं मूल्यवृद्धि से सम्बन्धित है वस्तुओं की उपलब्धता जितनी अधिक प्रभावी तरीके से होती है उतना ही महंगाई कम होती जाती है।

महंगाई में वृद्धी बढ़ने को समझने के लिए राजनीतिक पहलू को समझना आवश्यक है, भारत में राजनीतिक नेता अपनी मांग बनाए रखने अथवा बढ़ाने के लिए अपने को सामान्य व्यक्तियों से पृथक रखते है और इसके लिए वह विभिन्न तरीकों का प्रयोग करते रहते है जैसे वह महंगी गाड़ी से चलते है तथा विशिष्ट सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करते हैं।

महंगाई एक ऐसा घटक है जिसकी वजह से देश की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होता है। महंगाई के कारण समाज में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

किसी भी वस्तु का पृथक रूप से अपना कोई प्रभावी अस्तित्व नहीं होता, बल्कि उसका अस्तित्व उसकी उपलब्धता से सुनिश्चित होता है, जिस वस्तु की मांग बढ़ानी हो अथवा उसका मूल्य बढ़ाना हो उसकी पूर्ति को कम कर दिया जाय, महंगाई अपने आप उपस्थित हो जायेगी। महंगाई मनोवैज्ञानिक पक्ष से भी सम्बन्धित है, चूँकि मानव एक मनोवैज्ञानिक प्राणी है उसके मस्तिष्क में उन्ही वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा होती है जो उसकी पहुँच से बाहर होते है। भारत में इधर कुछ वर्षों से वस्तुओं के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है जिसके कारण समाज के निर्धन व्यक्तियों का जीवन यापन करना अत्यधिक कठिन हो गया है। भारत में लगभग आधी जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे निवास करती है जिसके लिए अपने परिवार के लिए भोजन की उपलब्धा ही सबसे बड़ा कार्य है।

उद्देश्य

1. माँग और पूर्ति के सम्बन्ध को सुनिश्चित करना।
2. महंगाई के समाधान में शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करना।
3. महंगाइ्र के समाधान में बुद्धि की भूमिका।
4. बौद्धिक योग्यता से परिचित कराना।

मूल्य वृद्धि के मुख्य घटक

पदार्थो की अपनी स्वयं की कोई उपयोगिता नहीं होती बल्कि उसकी उपयोगिता का निर्धारण मनुष्यों द्वारा किया जाता है, जिस वस्तु को अधिकांश मनुष्य पसंद करने लगते है उसकी मांग स्वतः ही बढ़ जाती है जिससे वस्तु के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि होने लगती है। मूल्यवृद्धि के लिए केवल वस्तु की उपलब्धता ही महत्वपूर्ण नही होती बल्कि उसकी गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण होती है, जिस वस्तु की गुणवत्ता अधिक होती है उसकी मांग अपने आप बढ़ जाती है। मांग अधिक होने से उस वस्तु की कमी हाने लगती है और स्वतः तेजी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

मूल्य वृद्धि के अन्य प्रभाव घटक के रूप में व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति को भी देखा जा सकता है। जब समाज में व्यक्तियों के पास पैसा अधिक होता है तो वह वस्तुओं की अधिक खरीद करते है परिणामस्वरूप भी मूल्यवृद्धि की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

वर्तमान में भारत में विभिन्न सरकारी योजनाओं को संचालित किये जाने के कारण लोगों के आर्थिक स्तर में वृद्धि हुई है।
मूल्यवृद्धि के अन्य प्रभावी घटकों में मनुष्य की आर्थिक सोच का भी व्यापक प्रभाव है। वर्तमान में प्रत्येक मनुष्य अपने को अधिक सम्पन्न दिखाना चाहता है जिसके कारण भी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होती है।
मूल्यवृद्धि का अन्य महत्वपूर्ण घटक बाजार में वस्तुओं की पूर्ति का कम होना है जिसके कारण भी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो जाती है।
सामान्यतः उत्पादन कम होने से पूर्ति कम होती है जिसके परिणामस्वरूप मांग में वृद्धि होने लगती है और मूल्य वृद्धि होते लगती है।
बाजार में आयात निर्यात भी मूल्यवृद्धि को प्रभावित करते है। जिस वस्तु की पूर्ति कम है उसके लिए सरकार की निर्यात की तिथि भी महत्व रखती है।
प्रायः सरकार अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए अनावश्यक वस्तुओं का भी निर्यात करने लगती है जिससे वस्तुओं की पूर्ति एकाएक कम हो जाती है और मूल्यवृद्धि होने लगती है।

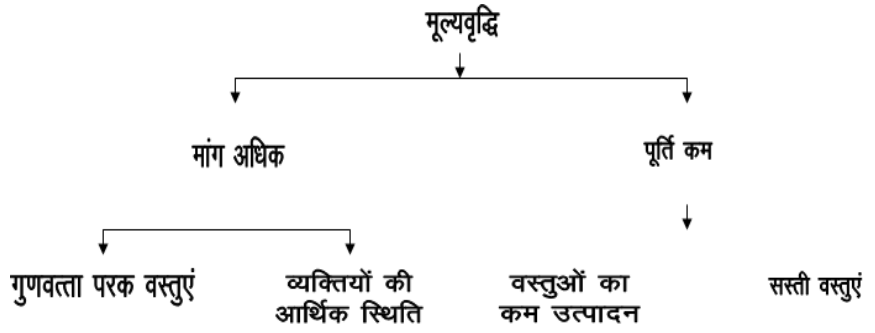

महंगाई के समाधान

महंगाई के सम्यक समाधान के लिए कुछ उपाय किए जाने आवश्यक है इन उपायों में पहला उपाय समाज में बड़ी नोटों के प्रचलन को समाप्त किया जाये क्योकि यह देखा गया है कि नकारात्मक मौद्रिक प्रचलन में बड़ी नोटों का प्रयोग सर्वाधिक होता है।
समाज में विलासिता से सम्बन्धित विभिन्न उत्पादों की उपलब्धता में कमी की जाये क्योंकि प्रायः इन उत्पादों की प्राप्ति के लिए मनुष्य किसी भी नकारात्मक कार्य को करने से नहीं हिचकता है ंकीमती एवं विलासिता आधारित उत्पादों की उपलब्धता प्रत्येक मनुष्य में प्राप्ति की इच्छा में वृद्धि करती है जिससे समाज में अपने आप मंहगाई बढ़ती जाती है।
महंगाई पर नियंत्रण के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न पेट्रोलियम पदार्थो के उपयोग को नियंत्रित किया जाये जिससे पेट्रोलियम पदार्थो के उपभोग को कम किया जा सके। सामान्यतः पेट्रोलियम पदार्थो की उपलब्धता दूसरे देशों से हाती है जिससे सरकार के राजस्व में कमी आती है और देश का विदेशी मुद्रा भण्डार घटता है। इसके लिए सम विषम नियम को लागू किया जाना आवश्यक है जिसमें पेट्रोलियम पदार्थो की खपत को कम किया जा सकता है। पेट्रोलियम पदार्थो की खपत में कमी आने से महंगाई में निश्चित रूप से कमी आएगी।
शिक्षा वह महत्वपूर्ण घटक है जो पूर्णतः शासन के नियंत्रण में होनी चाहिए। भारत में पब्लिक एवं निजी स्कूलों की बढ़ती संख्या ने नागरिकों में इस भावना का समावेश हो गया है कि निजी स्कूलों में ही अच्छी पढ़ाई होती है। सरकार को सुनिश्चित करना होगा की शिक्षा को अति आवश्यक कार्यों की सूची में डाल कर निजी स्कूलों का अधिग्रहण कर ले और एक समान फीस व्यवस्था स्थापित करे। उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया था कि सरकारी कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बच्चे अनिवार्य रूप से सरकारी विद्यालयों में ही अध्ययन करेंगे, किन्तु खेद का विषय यह है कि आज भी इस निर्णय को क्रियान्वित नही किया जा सका है।
निजी स्कूलों में बढ़ती फीस के कारण शिक्षा पर खर्च अत्यधिक होने लगता है और यह खर्च भारतीय जनमानस में आर्थिक असंतुलन को बढ़ाता है जिससे महंगाई बढ़ती है। इसका सम्यक समाधान निजी स्कूलों में प्रभावी कमी एवं सरकारी स्कूलों का प्रभावी नियंत्रण करके किया जा सकता है।
शिक्षा के घटक से जुड़े होने के कारण मैंने यह अनुभव किया की सरकारी विद्यालयों में योग्य अध्यापक होने के बावजूद वास्तविक प्रभावी प्रतिफल नही मिल पा रहा है, जबकि सरकार द्वारा ड्रेस, आहार, छात्रवृत्ति आदि की व्यवस्था प्रभावी तरीके से की जा रही है।
आज अभिभावक में यह सोच प्रभावी है कि सरकारी विद्यालय केवल सुविधा प्राप्त करने के केन्द्र है इसलिए वह सुविधा सरकारी विद्यालय से प्राप्त करते है और शिक्षा निजी विद्यलायों में लेते है।
यदि सरकारी विद्यालयों की अच्छी पढ़ाई के बाद निजी विद्यालयों की महंगी शिक्षा अपने आप समाप्त हो जाएगी क्योकि महंगी शिक्षा निरन्तर महंगाई को बढ़ाती है।

महंगाई वह महत्वपूर्ण घटक है जिसका प्रभावी समाधान शैक्षिक एवं बौद्धिक घटक द्वारा ही प्रभावी समाधान हो सकता है। वर्तमान में शिक्षा पर प्रत्येक व्यक्ति अधिक खर्च करना चाहता है जिससे उसका बच्चा अत्यधिक धन की प्राप्ति कर सके।

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि रूपये से सुख और मखमली बिस्तर से नींद नहीं खरीदी जा सकती। महंगाई अथवा मूल्यवृद्धि का प्रभावी समाधान केवल शैक्षिक एवं बौद्धिक आधार पर ही हो सकता है मनुष्य जितना अधिक शैक्षिक दृष्टि से मजबूत होगा उतना ही वह अपने अधिकारों के प्रति सजग होगा।

महंगाई के बौद्धिक समाधान के अंतर्गत जनता का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण होता है इसके लिए जनता को यह चाहिए की वह आवश्यकता से अधिक वस्तु का संचय न करे तथा महंगी वस्तुओं का कम से कम क्रय करे।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते है कि महंगाई का आर्थिक समाधान तो महत्वपूर्ण है लेकिन सर्वाधिक महत्व शैक्षिक एवं बौद्धिक समाधान है जिससे समस्या को कम किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *डॉ0 सीता राम जायसवाल, शिक्षा का मनावैज्ञानिक आधार प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ*
2. *वार्षिक रिपोर्ट: (2008) मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग, भारत*
3. *एस0एन0 मुखर्जी: भारत में शिक्षा-वर्तमान और भविष्य, विनोद पुस्तक मन्दिर डॉ0 राघव मार्ग, आगरा-2*
4. *बट्रेंड रसेल, सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धांत, जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन 1960*
5. *सूर्य नाथ सिंह, बट्रेंड रसेल का शैक्षिक दर्शन, बी0एच0यू0 प्रेस - वाराणसी*
6. *डब्ल्यू0एम0 रॉयबर्न, स्कूल का संगठन, आॅक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस - कलकत्ता*